ॐ

श्री सोलह कारण विधान

तीर्थंकर पद प्रदायक

षोडश कारण भावना

राजमल पवैया

तारादेवी पवैया प्रकाशन का सोलह कारण भावनाओं से भूषित मंगलमयी पावन विधान

Scanned with CamScanner

ॐ

श्री सोलह कारण विधान

सोलह कारण भावना का सम्यक् फल

तीर्थंकर समवशरण

Scanned with CamScanner

ॐ

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला का अट्ठावनवां पुष्प

श्री सोलह कारण विधान

राजमल पवैया

संपादक

संहितासूरि प्रतिष्ठाचार्य

श्री नाथूलाल जी शास्त्री, इन्दौर

ग्रंथमाला संपादक

श्री डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री, नीमच

अध्यक्ष

अ. भा. दि. जैन विद्वत परिषद

प्रकाशक

भरत पवैया एम. काम. एल. एल. बी.

संयोजक

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला

४४ इब्राहीमपुरा भोपाल - ४६२ ००१

प्रथम आवृत्ति	गणतंत्र दिवस वीर संवत् २५२४ २६ जनवरी १९९८	न्योछावर ६/-

Scanned with CamScanner

ॐ

श्री सोलह कारण विधान

मंगलाचरण

अनुष्टुप

मंगलं सिद्ध परमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरम् ।
मंगलं शुद्ध चैतन्यं आत्म धर्मोस्तु मंगलम् ॥

दोहा

जयति पंच परमेष्ठी जिन प्रतिमा जिन धाम ।
जय जगदम्बे दिव्य ध्वनि श्री जिन धर्म प्रणाम ॥

चामर

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञान रूप मंगलम् ।
गणधरादि सर्व साधु ध्यान रूप मंगलम् ॥
आत्म धर्म वस्तु धर्म सार्व धर्म मंगलम् ।
वस्तु का स्वभाव ही अनाद्यनंत मंगलम् ॥
भाव सोलह कारण महान मंगलं ।
दिव्य ज्ञान पति प्रधान तीर्थेश मंगलं ॥
भाव द्रव्य लिंग मुनि स्वरूप शुद्ध मंगलम् ।
आत्म अनुभूति शुद्ध भावना सुमंगलम् ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

पीठिका

वीरछंद

सोलह कारण भावना तीर्थंकर पद दाय ।
प्रथम भावना मुख्य है शाश्वत सौख्य प्रदाय ॥

माघ चैत्र अरु भाद्रपद तीन मास व्रत होय ।
जो यह व्रत धारण करे तीर्थंकर पद जोय ॥
सोलह कारण भावना आगम में विख्यात ।
सिद्ध स्वपद दातार हैं त्रिभुवन में प्रख्यात ॥
यही विधान करूं सहज भाव भक्ति उर लाय ।
शुद्धात्मा का ध्यान कर कर लूं मोक्ष उपाय ॥
तीर्थंकर प्रभु को नमूं करूं स्वपर का ज्ञान ।
भेदज्ञान विज्ञान पा पाऊं पद निर्वाण ॥
यह विधान प्रारंभ करूं है उर में संतोष ।
आप कृपा से हे प्रभो पाऊं जिनगुण कोश ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

भजन

अपनी शुद्धात्मा का ही मैं ध्यान करता हूं ।
अपने परमातमा का ही मैं भान करता हूँ ॥
मुझे बहिरात्मा से अब नहीं कोई मतलब ।
अब तो मैं अन्तरात्मा का ज्ञान करता हूँ ॥
राग से दोस्ती छोड़ी मैने इसी क्षण से ।
अपने शुद्धोपयोग को प्रणाम करता हूं ॥
पाप अरु पुण्य के भावों को मैंने छोड़ दिया ।
संग संवर के निर्जरा मैं कर्म करता हूँ ॥

जो विभाव परिणाम हमारा वह बाधक है शिव पथ में ।
जो स्वभाव परिणाम हमारा वह साधक है शिव पथ में ॥
सावधान हो निज अंतर में निर्णय कर शुद्धात्मा का ।
फिर रुचि पूर्वक समकित लेकर अनुभव कर निज आत्मा का ॥
तीर्थंकर प्रकृति राग शुभ भी बाधक है सम्यक शिवपथ में।
है शुद्ध वीतरागी ...

ॐ

श्री सोलह कारण विधान

समुच्चय पूजन

स्थापना

वीरछंद

भाऊं मैं दर्शन विशुद्धि आदिक सोलह भावना महान ।
तीर्थंकर पद दायक इनका ज्ञान करूं मैं हे भगवान ॥
जल फलादि वसु द्रव्य चढ़ाऊं करूं आत्मा का चिन्तन।
ध्रौव्य त्रिकाली का आश्रय ले काटूं कर्मो के बंधन ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावना अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावना अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावना अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद रोला

शुचिमयनिर्मल नीर चढ़ाऊं परम विनय से ।
त्रिविध रोग का नाश करूं मैं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

उत्तम शीतल चंदन लाऊं परम विनय से ।
भवाताप का नाश करूं मैं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

अक्षत शुद्ध चढ़ाऊं स्वामी परम विनय से ।
अक्षय पद की करूं साधना शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।
पावन पुष्प भावमय लाऊं परम विनय से ।
कामबाण की पीड़ा नाशूं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।
अनुभव रस चरु चरण चढ़ाऊँ परम विनय से ।
क्षुधा व्याधि की पीर मिटाऊं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।
सम्यक् ज्ञान दीप उजियारूं परम विनय से ।
महा मोक्ष मिथ्यात्व क्षय करूं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।
धर्म ध्यान मय धूप चढ़ाऊं परम विनय से ।
अष्ट कर्म सब क्षय कर डालूं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥
ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

Scanned with CamScanner

केवलज्ञान प्रगट हो जाता फिर पर का परिवेश नहीं ॥

अति उत्तम रसमय फल लाऊं परम विनय से ।
महामोक्ष फल पाऊँ प्रभु मैं शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

शुभ भावों के अर्घ्य बनाऊं परम विनय से ।
पद अनर्घ्य प्रगटाऊं स्वामी शुद्ध हृदय से ॥
तीर्थंकर पद दाता निर्मल सोलह कारण ।
भव्य भावनाएं भाऊं भव सागर तारण ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यम् नि. ।

महाअर्घ्य

छंद सरसी

मिथ्यातम क्षय हेतु करूंगा तत्त्वों का श्रद्धान ।
भेदज्ञान विज्ञान पूर्वक लूंगा सम्यक् ज्ञान ॥
तत्क्षण मैं अणुव्रत धारूंगा पंच पाप कर नाश ।
निरति चार व्रत नित पालूंगा ला वैराग्य प्रकाश ॥
फिर सम्यक् चारित्र शक्ति से करूं आत्म कल्याण ।
संयम लेकर कर डालूंगा अविरति का अवसान ॥
पंच महाव्रत मैं धारूंगा समिति गुप्ति के संग ।
ज्ञान स्वरथ पर चढ़कर स्वामी होऊँगा नि:संग ॥
यथाख्यात चारित्र प्रगट कर करूं मोह अरिक्षीण ।
फिर सर्वज्ञ दशा पाऊंगा होकर ज्ञान प्रवीण ॥
स्वपर प्रकाशक ज्ञान प्रगट कर करूं घाति अवसान ।
फिर अघातिया भी क्षय करके पाऊं पद निर्वाण ॥

Scanned with CamScanner

शक्ती दर्पणवत त्रयकाल॥

सोलह कारण भाव्य भावना का फल पाऊं नाथ ।
जब तक निज पद मिले न तब तक तजूं न तुव पद साथ॥

दोहा

सोलह कारण भावना पाऊं मैं दिनरात ।
महाअर्घ्य अर्पण करूं पाऊं मुक्ति प्रभात ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावनाय महाअर्घ्य नि. ।

जयमाला

छंद समान सवैया

अब निजात्मा की निज परिणति की सुन लो तुम विमल कहानी।
जिस विधि से शिव सुख मिलता है वह विधि मुनियों ने पहचानी॥
जब संशय की रात क्षय हुई ब्राह्म मुहूरत धन्य हो गया।
अंतर में तरुणायी छायी आत्म स्वभाव अनन्य हो गया ॥
ऊषा ने ईंगुर की डिबिया खोल मांग जब मेरी भरदी ।
उबटन लगा सूर्य किरणों ने मेरी छवि श्रृंगारित कर दी॥
ओढ़ ओढ़नी धवल धूप की मैं शाश्वत पथ पर जब आयी।
अन्तर्मन की सकल कलुषता क्षय निज भावों ने ही कर दी ॥
तभी मुझे चैतन्य कुमार मिला भव पथ पर रोते रोते ।
मैंने उसके दुर्बल कंधों पर तब अपनी उंगलीधरदी ॥
हुआ चकित वह निज परिणति पा विव्हल होकर खेद भगाया।
पर परिणति की भाव भंगिमा उसने धूल धूसरित कर दी॥
सप्त भयों से रहित हुआ वह चंद्र दूज सम दिखी सुछवि निज।
पूर्ण शुद्ध चारित्र धार उर क्षय कर दी अविरति की गरदी॥
एक कार्य रह गया शेष अब चार कषायों को जय करना।
तत्क्षण वह भी पूर्ण हो गया सर्व कषायों की गति हर दी॥

प्राप्त ज्ञान वह कर सकता है जो हो रत्नत्रय का भक्त ।
एकमात्र ज्ञातादृष्टा बन परभावों से बने विरक्त ॥

प्रगटी है अरहंत दशा अब लोकालोकी ज्ञान हो गया।
केवल ज्ञान प्रकाश मिल गया अब न रहा वह भव का दर दी॥
सिद्ध दशा पाने वाला है निज परिणति के ही प्रभाव से।
त्रिलोकाग्र सिंहासन ऊपर निज सत्ता सुस्थापित कर दी॥
गंध कुटी को भी तज देगा उर्ध्व लोक तक यह जाएगा।
इन्द्र सुरों ने जय जय ध्वनि से यह अवनी गुंजारित कर दी ॥
सोलह कारण धर्म भावना का फल पाया इस चेतन ने।
इसकी जय के गीत सुनाएं ऋषि मुनि गणधर जन गण सब ही॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश भावनाय जयमाला पूर्णार्घ्यम् नि. ।

आशीर्वाद

छंद रोला

भव्य भावना सोलह कारण नित ही भाऊं ।
ज्ञान ध्यान वैराग्य पूर्वक निज में आऊँ ॥
मुख्य प्रथम दर्शन विशुद्धि भावना जान लूं ।
इसके बिन तो सभी भावना शून्य मान लूं ॥

इत्याशीर्वाद :

भजन

ओ मेरे चेतन काहे को द्वंद करे ।
पर घर जाकर निज को भूला कर्म के बंध करे ॥
शुद्धातम से प्रीत लगा ले,
महा मोह मिथ्यात्व भगा ले,
राग द्वेष के भावों से क्यों निज को अंध करे ॥ओ मेरे.॥
ज्ञान भावना अब तो भाले,
गीत स्वभावी अपने गाले,
अन्तरात्मा बन जा अब तो मत छल छंद करे ॥ ओ मेरे.॥

Scanned with CamScanner

...परम पावन॥

प्रार्थना

शंकादिक वसु दोष न हों प्रभु आठों मद से दूर रहूँ।
तीन मूढ़ता छह अनायतन क्षय कर निज सरि मध्य बहूं॥
पंच पाप तज अणुव्रत तथा महाव्रत पालूं भली प्रकार।
सात तत्त्व छह द्रव्य जान लूं नौ पदार्थ का जानूं सार॥
स्वपर विवेक जगा अंतर में सम्यक् दर्शन प्रगटाऊं।
सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर मैं अज्ञान दशा सब विघटाऊं॥
तेरह विध चारित्र पालकर रत्नत्रय को अपनाऊं।
मोक्षमार्ग पर चलूं निरंतर यथाख्यात उर में लाऊं॥
मोह क्षीण कर प्रभु सर्वज्ञ दशा पाऊं मैं ज्ञानमयी।
चार घातिया क्षय कर डालूं पद पाऊं कल्याण मयी॥
फिर अघातिया भी नाशूं प्रभु सिद्ध स्वपद निज प्रगटाऊं।
ध्रौव्य त्रिकाली का आश्रय ले शाश्वत मुक्ति सौख्य पाऊं॥
अनुभव रस को पीना है तो पहिले अनुभव रस घोलूं।
निजात्मा में अनंत गुण है उन्हीं गुणों से मैं बोलूँ॥

अर्घ्यावलि

सोलह कारण भावना

यदा यदोपवासः म्युराकर्ण्यन्ते तदा तदा।
मोक्ष सौख्यस्य कर्तृणि कारणन्यपि षोडश॥

अर्थ- जब जब उपवास करे तब तब मोक्ष सुख की देने वाली इन सोलह कारण भावाओं को भी सुनना चाहिए।

(१)

दर्शन विशुद्धि भावना

असत्य-सहिता हिंसा मिथ्यात्वं च न दृश्यते ।
अष्टाङ्गं यत्र संयुक्तं दर्शनं तद्विशुद्धये ॥१॥

अर्थ- हिंसा, असत्य और मिथ्यात्व से रहित तथा आठ अङ्ग सहित सम्यकग्दर्शन दर्शन की विशुद्धि का कारण है ।

ताटंक

मिथ्यात्वादिक पापों से विरहित सम्यक् दर्शन पाऊं ।
अष्ट अंगयुत दोष सर्व पच्चीस रहित उर में ध्याऊं ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

१. ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धिभावनाविकल्परहितश्रद्धागुणसम्पन्नाय नमः ।

शुद्धपरमात्मस्वरूपोऽहम् ।

(२)

विनय सम्पन्न भावना

दर्शन-ज्ञान-चारित्र-तपसां यत्र गौरवम् ।
मनो-वाक्-काय-संशुद्धया सा ख्याता विनय-स्थितिः ॥२॥

अर्थ- मन, वचन और काय की शुद्धि पूर्वक दर्शन ज्ञान चारित्र और तप का जहाँ आदर किया जाता है वह विनय समपन्नता है ।

वीरछंद

दर्शन ज्ञान चारित्रमयी तप का उर में हो प्रभु बहुमान ।
मन वच कायां शुद्धि पूर्वक विनय भाव हो हृदय महान ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री विनय सम्पन्नता के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

२. ॐ ह्रीं विनयसम्पन्नताभावनाविकल्परहितचारित्रगुणसम्पन्नाय नमः ।

निर्मदचिद्रूपोऽहम् ।

Scanned with CamScanner

(३)

निरति चार शील व्रत भावना

अनेक-शील-संपूर्ण व्रत पञ्चक संयुतम् ।
पञ्चविंशति-क्रिया यत्र तच्छीलव्रतमुच्यते ॥३॥

अर्थ- जहाँ पांच व्रत सहित अनेक शीलों से परिपूर्णता को प्राप्त हुई पच्चीस क्रियाएँ होती है उसे शीलव्रत कहते हैं ।

वीरछंद

पांचों व्रत युत हों पच्चीस क्रिया हो महाशील गुण पूर्ण ।
निरतिचार व्रत शील पाल कर निज शिव सुख पाऊं आपूर्ण॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥३॥

ॐ ह्रीं श्री निरति चार शील व्रत भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

३. ॐ ह्रीं निरतिचारशीलव्रतपरिणामविकल्परहितानघचिद्रूपाय नमः ।

निर्दोषपरमात्मस्वरूपोऽहम् ।

(४)

अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना

काले पाठः स्वतो ध्यानं शास्त्रे चिन्ता गुरौ नतिः ।
यत्रोपदेशना लोके शास्त्र ज्ञानोपयोगता ॥४॥

अर्थ- योग्य काल में पाठ, स्तवन और ध्यान करना, शास्त्र का मनन करना, गुरु को नमन करना और उपदेश देना इन्हें लोक में अभीक्षण ज्ञानोपयोगता कहते हैं ।

ताटंक

योग्य काल में ध्यानस्तवन शास्त्र मनन गुरु नमन सदा।
ज्ञान भावना आत्मा साधना विस्मृत हो प्रभु नहीं कदा ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥४॥

Scanned with CamScanner

कर्म शुभाशुभ सब अज्ञान स्वरूपमोह के चारण है।
निज स्वभाव से है विपरीत बंध के सारे कारण हैं ॥

ॐ ह्रीं श्री अभीक्षण ज्ञानोपयोग भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं।

४. ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगविकल्परहितनित्यज्ञानस्वरूपाय नमः।

विज्ञाघनस्वरूपोऽहम्।

(५)

संवेग भावना

पुत्र-मित्र-कलत्रेभ्यः संसार-विषयार्थतः।
विरक्तिर्जायते यत्र स संवेगो बुधैः स्मृतः ॥५॥

अर्थ- जहाँ पुत्र, मित्र स्त्री और सांसारिक विषयों से विरक्ति होती है उसे पण्डितजन संवेग कहते हैं।

ताटंक

सांसारिक विषयों से स्वामी उदासीनता हो पूरी।
पुत्र कलत्र मित्र पुत्री के ममत्व से हो प्रभु दूरी ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥५॥

ॐ ह्रीं श्री संवेग भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं।

५. ॐ ह्रीं संवेगपरिणामविकल्परहितनिर्भयस्वरूपाय नमः।

सदानन्दचिद्रूपोऽहम्।

(६)

शक्ति तस्त्याग भावना

जघन्य-मध्यमोत्कृष्ट पात्रेभ्यो दीयते भृशम्।
शक्त्या चतुर्विधं दानं सा ख्याता दान-संस्थितिः ॥६॥

अर्थ- जघन्य, मध्यम और उत्कृष्ट पात्रों को जहाँ शक्ति के अनुसार चार प्रकार का दान दिया जाता है वह दानसंस्थिति कहलाती है।

ताटंक

योग्य पात्र को योग्य दान दूं यथाशक्ति मैं नाथ सदा।
चार प्रकार दान देने में प्रभु प्रमाद हो नहीं कदा ॥

Scanned with CamScanner

शुद्ध आत्मा को धारण करना भव कष्ट निवारण है ॥

शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥६॥

ॐ ह्रीं श्री शक्ति पूर्वक त्याग भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

६. ॐ ह्रीं शक्तितस्त्यागपरिणामविकल्परहितनिर्लोभस्वरूपाय नमः ।

त्यागोपादानशून्यत्वशक्तिरूपोऽहम् ।

(७)

शक्ति तस्तप भावना

तपो द्वादश-भेदं हि क्रियते मोक्ष-लिप्सया ।
शक्ति तो भक्तितो यत्र भवेत्सा तपसः स्थितिः ॥७॥

अर्थ- जहाँ मोक्ष की इच्छा से शक्ति और भक्ति के अनुसार बारह प्रकार का तपश्चरण किया जाता है वह तपसंस्थिति कहलाती है ।

ताटंक

शक्ति पूर्वक सम्यक् तप हो सम्यक् दर्शन सहित प्रभो ।
इच्छाओं पर मैं जय पाऊं हो प्रमाद से रहित विभो ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री शक्ति पूर्वक तप भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

७. ॐ ह्रीं शक्तितस्तपोपरिणामविकल्परहितज्ञानतेजःस्वरूपाय नमः ।

अखण्डज्ञानचिद्रूपोऽहम् ।

(८)

साधु समाधि भावना

मरणोपसर्ग-रोगादिष्टवियोगादनिष्टसंयोगात् ।
न भयं यत्र प्रविशति साधु-समाधिः स विज्ञेयः ॥८॥

अर्थ- मरण, उपसर्ग, रोग, इष्ट वियोग और अनिष्ट संयोग से जहाँ किसी प्रकार का भय नहीं होता है उसे साधुसमाधि जानना चाहिए ।

ताटंक

साधु समाधि हृदय में हो प्रभु तदनुकूल आचरण करूं ।
इष्ट अनिष्ट संयोगों में भी भय विरहित निज शरण वरूँ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥८॥

ॐ ह्रीं श्री साधु समाधि भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूँ ।

८. ॐ ह्रीं साधुसमाधिपरिणामविकल्परहितसमतास्वरूपाय नमः ।

साम्यनिकेतनचिद्रूपोऽहम् ।

(९)

वैयायवृत्ति करण भावना

कुष्ठोदर-व्यथा-शूलैर्वात-पित्त-शिरोर्तिभिः ।
कास-श्वास-जरा-रोगैः पीडिता ये मुनीश्वराः ॥
तेषां भैषज्यमाहारं शुश्रुषा पथ्यमादरात् ।
यत्रैतानि प्रवर्तन्ते वैयावृत्त्यं तदुच्यते ॥९॥

अर्थ- जो मुनीश्वर कोढ़, उदर की पीड़ा, शूल वात, पित्त, सिर की पीड़ा, खाँसी, स्वांस, बुढ़ापा, आदि रोगों से पीड़ित हैं उन्हें भक्ति पूर्वक दवा देना, आहार देना, शुश्रुषा करना और पथ्य देना ये कार्य जहाँ किये जाते हैं उसे वैयावृत्त्य कहते हैं ।

ताटंक

बाल वृद्ध रोगी दुखिया मुनियों की वैय्या वृत्ति करूं ।
उनकी पीड़ा करूं निवारण उनके दुख सम्पूर्ण हरूँ ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री वैयायवृत्ति करण रूप धर्म भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूँ ।

९. ॐ ह्रीं वैयावृत्यकरणपरिणामविकल्परहितनिरामयस्वरूपाय नमः ।

चैतन्यरसरसायनस्वरूपोऽहम् ।

Scanned with CamScanner

(१०)

अर्हद भक्ति भावना

मनसा कर्मणा वाचा जिन-नामाक्षरद्वयम् ।
सदैव स्मर्यते यत्र सार्हद्भक्तिः प्रकीर्तिता ॥१०॥

अर्थ- जहाँ मन, वचन और काय से जिन नाम के दो अक्षरों का स्मरण किया जाता है उसे अर्हद्भक्ति कहते हैं ।

ताटंक

अरहंतों की भक्ति करूं मैं उनकी आज्ञा को मानूं ।
उनकी वाणी हृदंयगम कर शुद्ध आत्मा निज जानूं ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हद् भक्ति भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूँ ।

१0. ॐ ह्रीं अर्हद्भक्तिविकल्परहितपवित्रचिद्रूपाय नमः ।

निजभगवानस्वरूपोऽहम् ।

(११)

आचार्य भक्ति भावना

निर्ग्रन्थ-भुक्तितो भुक्तिस्तस्य द्वारावलोकनम् ।
तद्भोज्यालाभतो वस्तु-रसत्यागोपवासता ॥
तत्पाद-वन्दना पूजा प्रणामो विनयो नतिः ।
एतानि यत्र जायन्ते सूरि भक्तिर्मता च सा ॥११॥

अर्थ- मुनियों के आहार कर जाने पर आहार करना, आहार के लिए द्वारा पेक्षण करना, मुनियों का आहार न होने पर रस आदि छोड़ देना या उपवास करना, उनके चरणों की वन्दना, पूजा प्रणाम, विनय और नमस्कार ये क्रियाएँ जहाँ की जाती हैं वह गुरु भक्ति मानी गयी है ।

Scanned with CamScanner

व्रत नियम शील तप पुण्य कर्म है शुक्ल ध्यान से बहुतदूर।
अविकल्प अचल शुद्धात्म ध्यान में लय हो जा सबको विसूर॥

ताटंक

मुनि पाठक आचार्यो की हो विनय पूर्वक भक्ति हृदय ।
इनकी महा कृपा से पाऊं रत्नत्रय की शक्ति हृदय ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥११॥

ॐ ह्रीं श्री आचार्य भक्ति भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

११. ॐ ह्रीं आचार्यभक्तिविकल्परहितमङ्गलचिद्रूपाय नम- ।

स्वयंभूस्वरूपोऽहम् ।

(१२)

बहुश्रुत भक्ति भावना

भव-स्मृतिरनेकान्त-लोकालोक-प्रकाशिका ।
प्रोक्ता यत्रार्हता वाणी वर्ण्यते सा बहुश्रुतिः ॥१२॥

अर्थ- जिसमें जीवों की जनम जन्मान्तर की कथाओं का वर्णन है जो अनेकान्त तत्त्व और लोकालोक को बतलाने वाली है ऐसी जिनवाणी का जहां व्याख्यान किया जाता है उसे वहुश्रुत भक्ति कहते हैं ।

ताटंक

चारों ही अनुयोगों का व्याख्यान सुनूं मैं रुचि पूर्वक ।
बहुश्रुत भक्ति हृदय में हो प्रभु बारंबार विनय पूर्वक ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१२॥

ॐ ह्रीं श्री बहुश्रुत भक्ति भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

१२. ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्तिविकल्परहितपरिपूर्णज्ञानस्वरूपाय नमः ।

निजबोधालयस्वरूपोऽहम् ।

(१३)

प्रवचन भक्ति भावना

Scanned with CamScanner

षड-द्रव्य-पञ्च-कायत्वं सप्त-तत्त्वं नवार्थता ।
कर्म-प्रकृति-विच्छेदो यत्र प्रोक्त: स आगम: ॥१३॥

अर्थ- छह द्रव्य, पाँच अस्तिकाय, सात तत्त्व, नौ पदार्थ और कर्म प्रकृतियों के विच्छेद आदि का जिसमें वर्णन है उस आगम का पढ़ना प्रवचन भक्ति है ।

ताटंक

द्रव्य तत्त्व नौ पदार्थों जानूं अस्तिकाय का ज्ञान करूं ।
प्रवचन भक्ति हृदय में हो प्रभु मैं अपना कल्याण करूं ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्री प्रवचन भक्ति भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

१३. ॐ ह्रीं प्रवचनभक्तिविकल्परहितज्ञानेश्वरस्वरूपाय नमः ।

महेश्वरचिद्रूपोऽहम् ।

(१४)

आवश्य का परिहाणि भावना

प्रतिक्रमस्तनूत्सर्ग: समता वंदना स्तुति: ।
स्वाध्याय: पठ्यते यत्र तदावश्यकमुच्यते ॥१४॥

अर्थ- प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग, समता, वन्दना, स्तुति और स्वाध्याय से छह आवश्यक जहाँ किये जाते हैं उसे आवश्यक भावना कहते हैं ।

वीरछंद

षट आवश्यक निरतिचार पालूं हो सावधान जिनराज ।
प्रतिक्रमण स्वाध्याय वंदना सामयिक पालूं सुखकार ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१४॥

ॐ ह्रीं श्री आवश्यक का परिहाणि भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूँ ।

१४. ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहाणिपरिणामविकल्परहितशाश्वतचिद्रूपाय नमः ।

अक्षयचिद्रूपोऽहम् ।

क्रिया कान्ड का आडंबर तजा जो भी निज में व्यस्त हो।
उसका ही संसार निकट है उसका विभ्रम ध्वस्त हो ॥

(१५)

सन्मार्ग प्रभावना

जिन-स्वानं श्रुताख्यानं गीत वाद्यं च नर्तनम् ।
यत्र प्रवर्तने पूजा सा सन्मार्ग प्रभावना ॥१५॥

अर्थ- जिनदेव का अभिषेक, श्रुत का व्याख्यान, गीत वाद्य तथा नृत्य आदि पूजा जहाँ की जाती है वह सन्मार्ग प्रभावना है ।

ताटंक

निज प्रभु के दर्शाये पथ की प्रभावना मैं सदा करूँ ।
निज पूजादिक सत्कर्मो का ही प्रयत्न मैं सतत करूं ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१५॥

ॐ ह्रीं श्री सन्मार्ग प्रभावनारूप भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

१५. ॐ ह्रीं मार्गप्रभावनाविकल्परहितानन्तगुणचिद्रूपाय नमः ।

सहजानन्दस्वरूपोऽहम् ।

(१६)

प्रवचन वत्सलत्व भावना

चारित्र-गुण-युक्तानां मुनीनां शील-धारिणाम् ।
गौरवं क्रियते यत्र तद्वात्सल्यं च कथ्यते ॥१६॥

अर्थ- चारित्र गुण के धारी शीलवान् मुनियों का जहाँ आदर किया जाता है उसे वात्सल्य कहते हैं ।

वीरछंद

शीलवान चारित्र वान मुनियों की विनय हृदय हो नाथ ।
वात्सल्य हो पूर्ण हृदय में भव्य भावना ही हो साथ ॥
शुद्ध भावना सोलह भाऊं भाव हृदय में शुद्ध जगा ।
मिथ्यात्वादिक पांचों प्रत्यय सदा सदा को दूर भगा ॥१६॥

Scanned with CamScanner

सम्यग् ... ... का अस्त हो ।

रत्नत्रय की परमौषधि पी सदा सदा को स्वस्थ हो ॥

ॐ ह्रीं प्रवचन वात्सलत्व भावना के लिए मैं अर्घ्य अर्पित करता हूं ।

१६. ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वविकल्परहितनिजानन्दस्वरूपाय नमः ।

निजसौख्यालयस्वरूपोऽहम् ।

अंतिम महाअर्घ्य

छंद

आज मेरा चेतन बना आत्म ज्ञानी ।

आज मेरा चेतन बना आत्म ध्यानी ॥

स्वपर विवेक पूर्ण अतंर में जागा ।

मोह मिथ्यात्व भाव पल भर में भागा ॥

हो गया निजात्मा का पूरा श्रद्धानी ।

आज मेरा चेतन बना आत्म ज्ञानी ॥

शुद्ध स्वरूपाचरण उर में आया ।

शुद्धात्मा का स्वरूप ही सुहाया ॥

पाया है रत्नत्रय इसने लासानी ।

आज मेरा चेतन बना आत्म ज्ञानी ॥

पायी है इसने शरण आत्मा की ।

धुन इसको लागी है परमात्मा की ॥

जीवंत शक्ति भी पायी सुहानी ।

आज मेरा चेतन बना आत्म ज्ञानी ॥

छंद दिग्वधू

रागादि विकारों से भव भ्रमण किया करता ।

मोहादि विभावों का ज्वर ताप चढ़ा करता ॥

इनके क्षय करने का उत्तम उपाय समकित ।

सम्यक् दर्शन ही से भ्रम ताप नाश करता ॥

जब सम्यक् ज्ञान किरण प्रगटित होती उर में ।
चारित्र शक्ति का स्रोत तत्काल भव्य झरता ॥
यह उत्तम रत्नत्रय भव पार लगाता है ।
निज अनुभव रस पीकर आन्नद पूर्ण भरता ॥
हो जाता मुक्त त्वरित यह सकल विभावों से ।
फिर सदा सदा को ही आनंद हृदय धरता ॥
जो पर को ध्याता है भव बंधन में पड़ता ।
जो निज को ध्याता है वह भव बंधन हरता ॥

दोहा

महाअर्घ्य अर्पण करूं निरखूं आत्म स्वरूप ।
सोलह कारण भावना शिव सुख प्रद्रा अनूप ॥

ॐ ह्रीं श्री षोडश कारण भावना विकल्प रहितानन्त गुणालय स्वरूपाय महाअर्घ्यं नि.।

महाजयमाला

छंद विजया

मोह की वरुणी का नशा जब चढ़ा ।
तो अचेतन से चेतन पराजित हुआ ॥
मोह की वारुणी फिर भी त्यागी नहीं ।
अरु न शुद्धात्मा में विराजित हआ ॥
चारों गतियों में भ्रम भव के पाया है दुख ।
स्वर्ग में जा के हर बार मूर्छित हुआ ॥
स्वर्ग से गिर के एकेन्द्रिय प्राणी हुआ ।
या निगोदों में जा करके दूषित हुआ ॥
या लगाए हैं नरकों के फेरे बहुत ।
सातों नरकों में पाएं है दुख ही बहुत ॥

Scanned with CamScanner

यह तो संज्ञी असंज्ञी बना है सदा ।
दुख त्रियंचों के पाए हैं इसने बहुत ॥
फिर मनुज होके इसने किए खोटे कृत ।
न्याय अन्याय इसने न समझा कभी ॥
भक्ष्य तजकर अभक्ष्य किया है ग्रहण ।
अपने निज रूप को भी न जाना कभी ॥
यों बिताया समय चारों गति में रहा ।
मार्ग पंचम स्वगति का मिला ही नहीं ॥
धर्म जिनवर का पाया मगर हाय रे ।
इसके मन का कमल तो खिला ही नहीं ॥
होके निश्चिंत पापों का रस पीता है ।
पुण्य रस भी तो इसको सुहाता नहीं ॥
भूल से पुण्य रस भी कभी पीता है ।
तो स्वयं अपने घर में भी आता नहीं ॥
दुख के ही बीज बोता रहा है सदा ।
राग द्वेषों की कालिख को पोते हुए ॥
इसका भव्यत्व बल शून्य जैसा हुआ ।
खोयी पर्याय नर इसने रोते हुए ॥
अपने चैतन्य की बात सुनता नहीं ।
आत्म चर्चा से यह दूर रहता सदा ॥
भव की चर्चा में मद होश होकर अरे ।
पंच परिवर्त्तन की धारा में बहता सदा ॥
कैसे कल्याण हो इसका बतलाओ तो ।
कैसे सन्मार्ग पर आए दुख क्षय करे ॥

Scanned with CamScanner

स्वपर भेद विज्ञान हमारा भव सागर तारण हारा ।
मैंहूँ शुद्ध त्रिकाली ज्ञायक एक मात्र जानन हारा ॥

कैसे संसार सारा विजय यह करे ।
कैसे शुद्धात्मा से ये परिचय करे ॥
पुण्य का जब उदय इसका आता क्षणिक ।
वारुणी मोह की पीता जी खोल कर ॥
यह कुगुरुओं की वाणी का पीता गरल ।
मारा फिरता है यह पर की जय बोलकर ॥
अब फिर अवसर मिला है अपूर्व इसे ।
ज्ञान की भावना को जगा ले जरा ॥
मूल की भूल जड़ से उखाड़े तो यह ।
मोह मिथ्यात्व पूरा भगा ले त्वरा ॥
बस यहाँ से ही प्रारंभ होगा दिवस ।
आत्म सुख की नदी में नहा ले ज़रा ॥
शुद्ध आनंद की धार पाएगा तू ।
पा ले अपना स्वभावी सुदर्शन जरा ॥
देख़ अरहंत तुझको बुलाते निकट ।
उनकी वाणी को सुन अपना कल्याण कर ॥
भेद विज्ञान की महिमा उर में जगा ।
संयमित हो के परिपूर्ण निर्वाण वर ॥
मार्ग यह एक केवल है कल्याण का ।
शुद्ध सम्यक्त्व अंतर में अब धार ले ॥
भावना सोलहों भा विनय पूर्वक ।
ज्ञान धारा में बह करके भव पार ले ॥

ॐ ह्रीं श्री सोलह कारण भावनाय महाजयमाला पूर्णार्घ्यम् नि. ।

सोलह कारण आत्म भावनाएँ भाऊं मैं भली प्रकार ।
तीर्थंकर पद दाता अनुपम करूँ सदा इनका सत्कार ॥
एक मात्र दर्शन विशुद्धि भावना मुख्य है मंगलकार ।
इसका ही आश्रय लेकर मैं हो जाऊं भव सागर पार ॥

इत्याशीर्वाद :

शान्ति पाठ

ज्ञान भावना से प्रभो होऊं ओत: प्रोत ।
निज में ही पाऊं प्रभो परम शान्ति का स्रोत ॥
आप कृपा से हो गया है प्रभु पूर्ण विधान ।
सोलह कारण भावना भाऊं हे भगवान ॥
परम शान्ति की प्रप्ति हो हो सबका कल्याण ।
सिद्धों सम सब जीव है मुझे हो गया ज्ञान ॥
सप्त भयों से रहित हों जग के सारे जीव ।
आत्म भावना भा प्रभो पाएँ सौख्य सदीव ॥

ॐ शान्ति: शान्ति: शान्ति:

पुष्पाजलि

जाप्य मंत्र ॐ ह्रीं षोडश कारण भावनाय नम:

क्षमापना

दया सिन्धु जिनराज तुम परम दया के कोष ।
भूल चूक सब क्षमा कर कर दो प्रभु निर्दोष ॥
मैं अज्ञानी जीव हूँ दूर करो अज्ञान ।
तुम समान मैं भी प्रभो पाऊं पद निर्वाण ॥

पुष्पांजलि

Scanned with CamScanner

ॐ

श्री सोलह कारण विधान

निज भावना रत

तारादेवी पवैया

की स्मृति में संस्थापित

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला ४४ इब्राहीमपुरा भोपाल ४६२ ००१

आध्यात्मिक

Scanned with CamScanner